यशवंतराव मेघा वाले शासकीय महाविद्यालय मगरलोड

नैक पीयर टीम का हार्दिक अभिनंदन करता है.....

विभागीय पृष्ठभूमि

- यशवंतराव मेघा वाले शासकीय महाविद्यालय मगरलोड की स्थापना 2012-13 में स्नातक स्तर पर कला वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय में हिंदी भाषा के पढ़ाई के साथ हुई। 2020-21 में स्नातक प्रथम वर्ष के साथ हिंदी साहित्य का अध्ययन अध्यापन निरंतर जारी है। यशवंतराव मेघा वाले शासकीय महाविद्यालय मगरलोड, जिला-धमतरी (छत्तीसगढ़) पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर से संबध्द है। स्नातक स्तर पर समस्त कक्षाओं की पढ़ाई एवं परीक्षा वार्षिक प्रणाली के आधार पर होती है। महाविद्यालय के ग्रंथालय में हिंदी विभाग हेतु संशोधित पाठ्यक्रमानुसार मूलभूत पुस्तकों की व्यवस्था है।

हिंदी भाषा शिक्षण का दृष्टिकोण

हिंदी भाषा भारत की राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है। इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी को इसकी गहन अध्ययन करनी चाहिए।

हिंदी भाषा अनेक प्रदेशों की राजभाषा होने के साथ-साथ देश की राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा है जिसके माध्यम से देश के लोग ही नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी लोग जुड़ते हैं।

हिंदी भाषा सांस्कृतिक सेतु का काम करती है। यह भाषायी विकास का प्रतीक है।

हिंदी भाषा शिक्षण का लक्ष्य

- हिंदी भाषा एवं व्याकरण का समुचित ज्ञान प्रदान करते हुए हिंदी भाषा के महत्व को समझाना ।प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए प्रेरित करना।
- हिंदी के गद्य -पद्य की विधाओं के माध्यम से ज्ञान एवं भक्ति का विकास।
- विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमता का विकास।
- हिंदी के माध्यम से राष्ट्रीय एकता का विकास।

विभाग में स्वीकृत पदों की संख्या

मांक	पदाधिकारी	संख्या
1	सहायक प्राध्यापक	02

विभाग में पदस्थ शिक्षक गण

क्र.	नाम	पदनाम	शैक्षणिक योग्यता	प्रथम नियुक्ति	छायाचित्र
.	रणजीत सिंह	अतिथि व्याख्याता	एम.ए., एम.फिल, सेट 2018, पी-एच.डी.2018 से निरंतर	12.11.2021	
.	अनिता साहू	अतिथि व्याख्याता	एम.ए., सेट(2013), बी.एड.(2014),	07.11.2022	

शिक्षक शोध कार्य

वर्ष	शोध कार्य /उपाधि	शोध विषय	संस्था
2016	एम. फिल.	'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह में मानवीय संवेदना	पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर
2018	पी-एच.डी.(निरन्तर)	कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री मन का अंतर्द्वंद	संत गुरु घासीदास स्नातकोत्तर शासकीय महाविद्यालय कुरूद, जिला धमतरी (छत्तीसगढ़)

प्रकाशित पत्रिका

	वर्ष	पत्रिका	ISSN N.	आलेख शीर्षक
	2020	दृष्टिकोण	ISSN 0975-119X	कृष्णा सोबती के उपन्यास 'चन्ना' में चन्ना के जीवन संघर्ष की मार्मिक अभिव्यंजना

पाठ्यक्रम सीटें

स्नातक हिंदी भाषा (आधार पाठ्यक्रम) बी.ए.- 80

ी.एस.सी.- बायो 80,

ाणित-40 (2021-22)

ी.काम- 60

ी ए.स्नातक हिन्दी साहित्य 40 (2020-21) से।

कक्षावार पाठ्यक्रम परिचय

क्र.	कक्षा	विषय एवं प्रश्न पत्र
1.	बी.ए. I, II, III वर्ष	हिंदी भाषा (आधार पाठ्यक्रम-I)
2.	बी.एस.सी. I, II, III वर्ष	हिंदी भाषा (आधार पाठ्यक्रम-I)
3.	बी.काम. I, II, III वर्ष	हिंदी भाषा (आधार पाठ्यक्रम-I)
4.	बी.ए. I	हिंदी साहित्य 1. प्राचीन हिंदी काव्य 2. हिंदी कथा साहित्य
5.	बी.ए. II	हिंदी साहित्य 1. अर्वाचीन हिंदी काव्य 2. हिंदी निबंध तथा अन्य गद्य विधाएं
6.	बी.ए. III	हिंदी साहित्य 1.जनपदीय भाषा साहित्य छत्तीसगढ़ी 2. हिंदी भाषा साहित्य का इतिहास एवं काव्यांग विवेचन

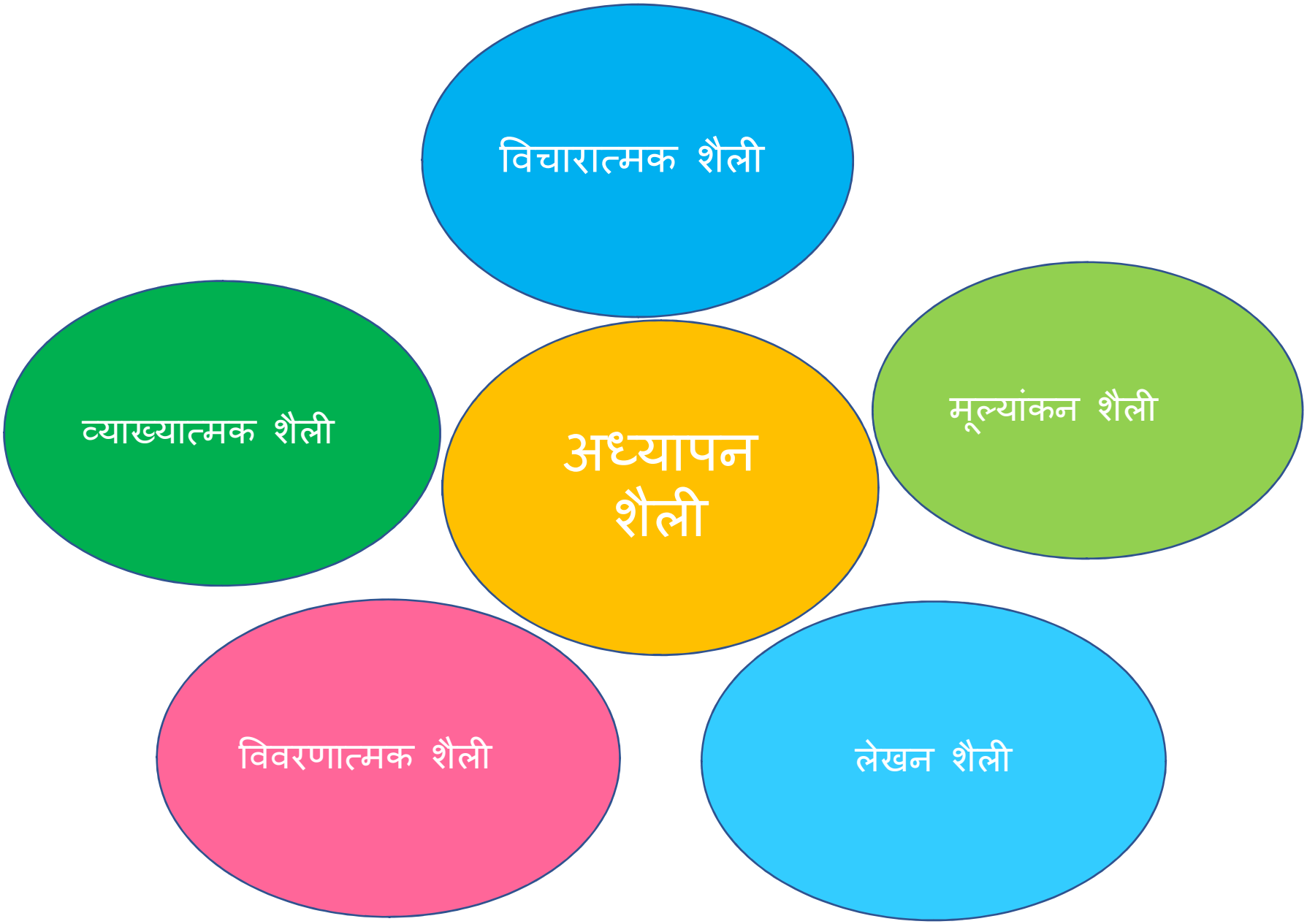
विचारात्मक शैली
व्याख्यात्मक शैली
अध्यापन शैली
मूल्यांकन शैली
विवरणात्मक शैली
लेखन शैली

मूलभूत एवं संदर्भ पुस्तकें।

विभागीय आयोजन

सूरदास
महाकवि विद्यापति
(1352 - 1448)
फणीश्वरनाथ रेणु
जयशंकर
INDIA
रसखान
जन्म- सन् 1533 ई०
मृत्यु- सन् 1618 ई०
जन्म-स्थान- दिल्ली
वास्तविक नाम- सैयद इब्राहीम
प्रमुख रचनाएँ-
सुजान रसखान एवं प्रेमवाटिका
भाषा- ब्रज
शैली- मुक्तक
मोहन राकेश

केशव कोशले द्वारा पल्लवन विषय पर सेमिनार प्रस्तुतीकरण
कु. नूतन द्वारा 'पल्लवन' पर सेमिनार प्रस्तुतिकरण

विगत 5 वर्षों में दर्ज संख्या

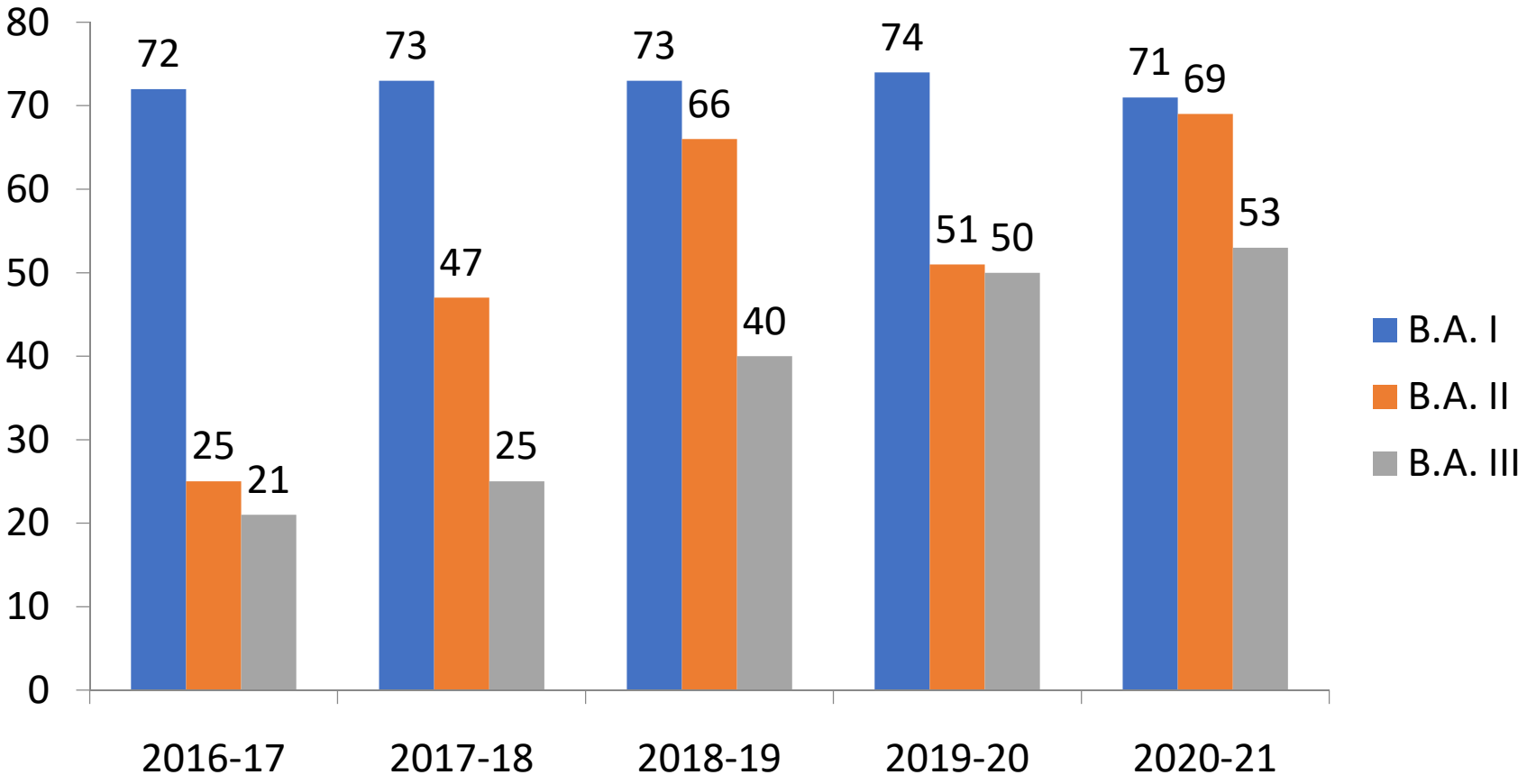

विगत 5 वर्षों में दर्ज संख्या

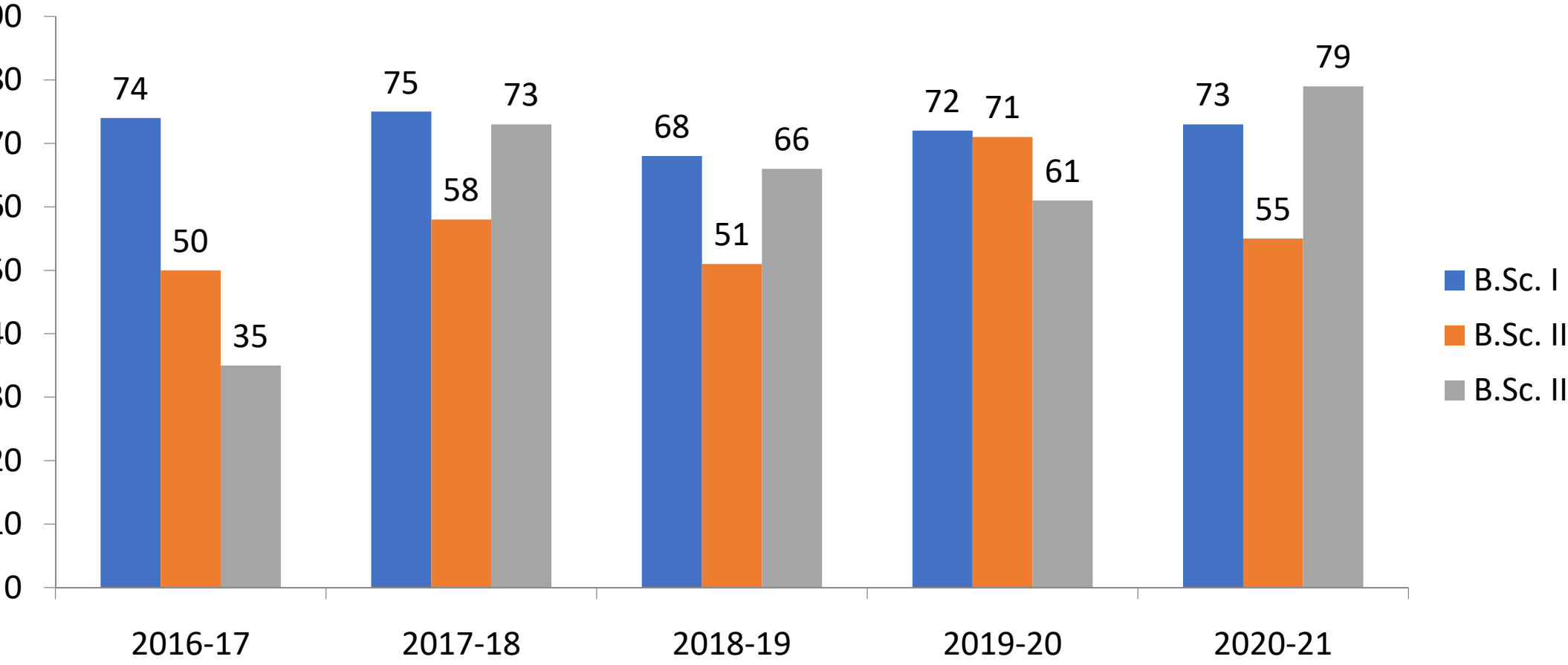

विगत 5 वर्षों में दर्ज संख्या

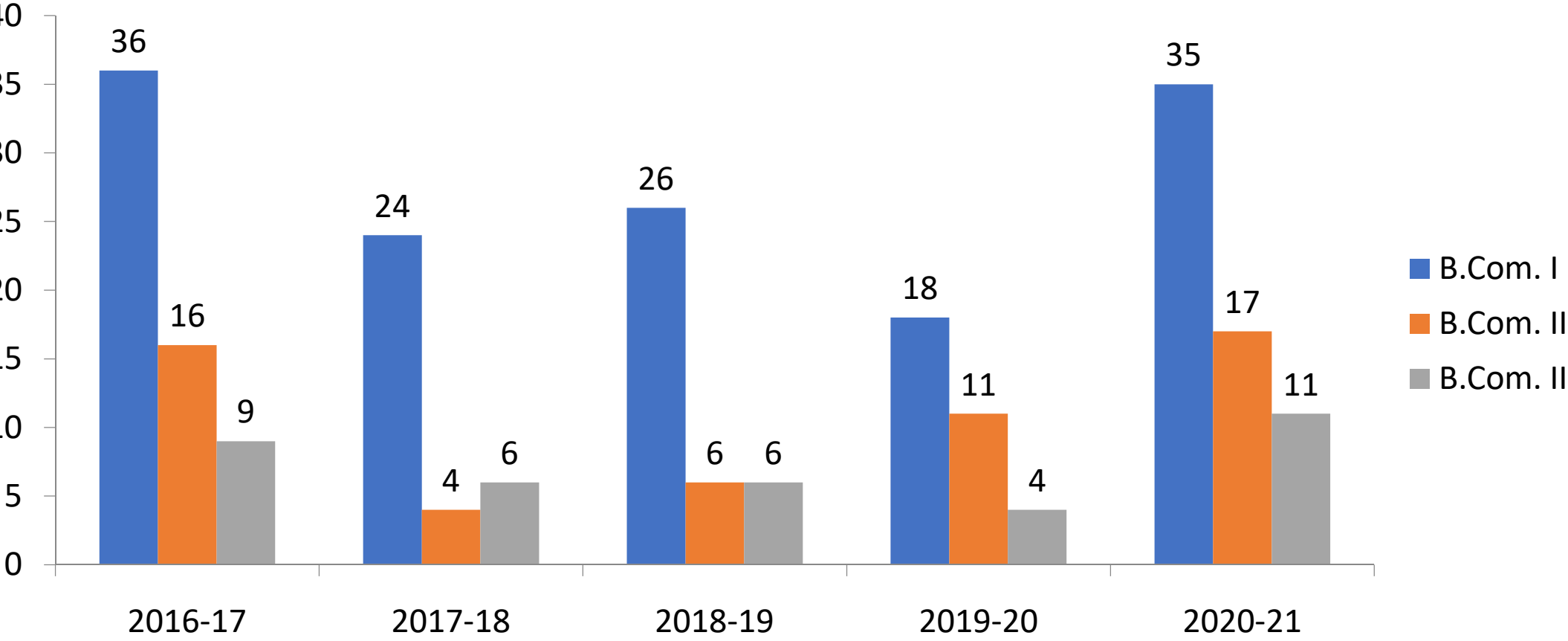

विगत वर्षों में हिन्दी साहित्य में दर्ज संख्या

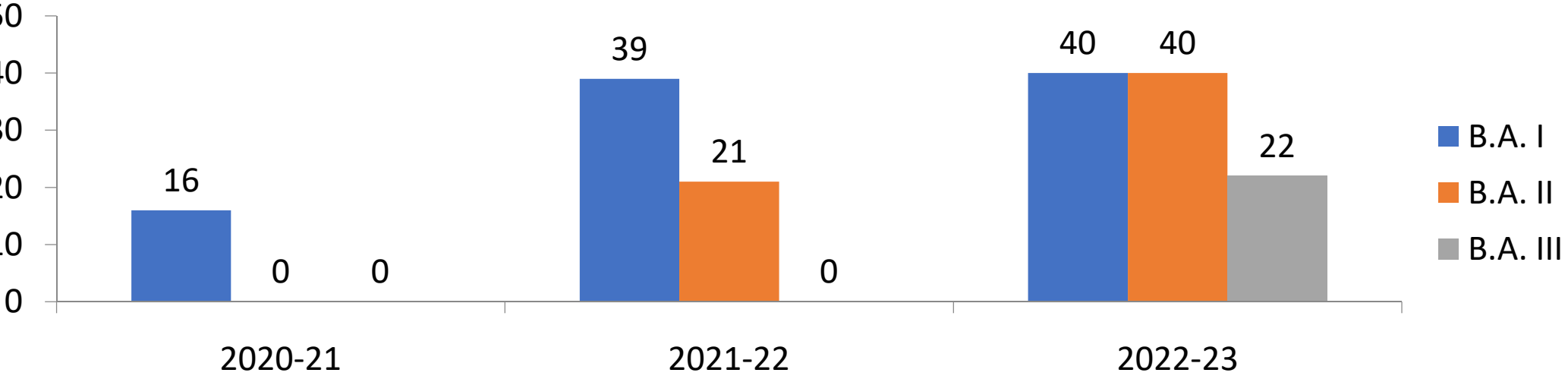

वर्ष में 2020-21 एवं 2021-2022 हिन्दी साहित्य में परीक्षा परिणाम 100% र

विगत 5 वर्षों में परीक्षा परिणाम

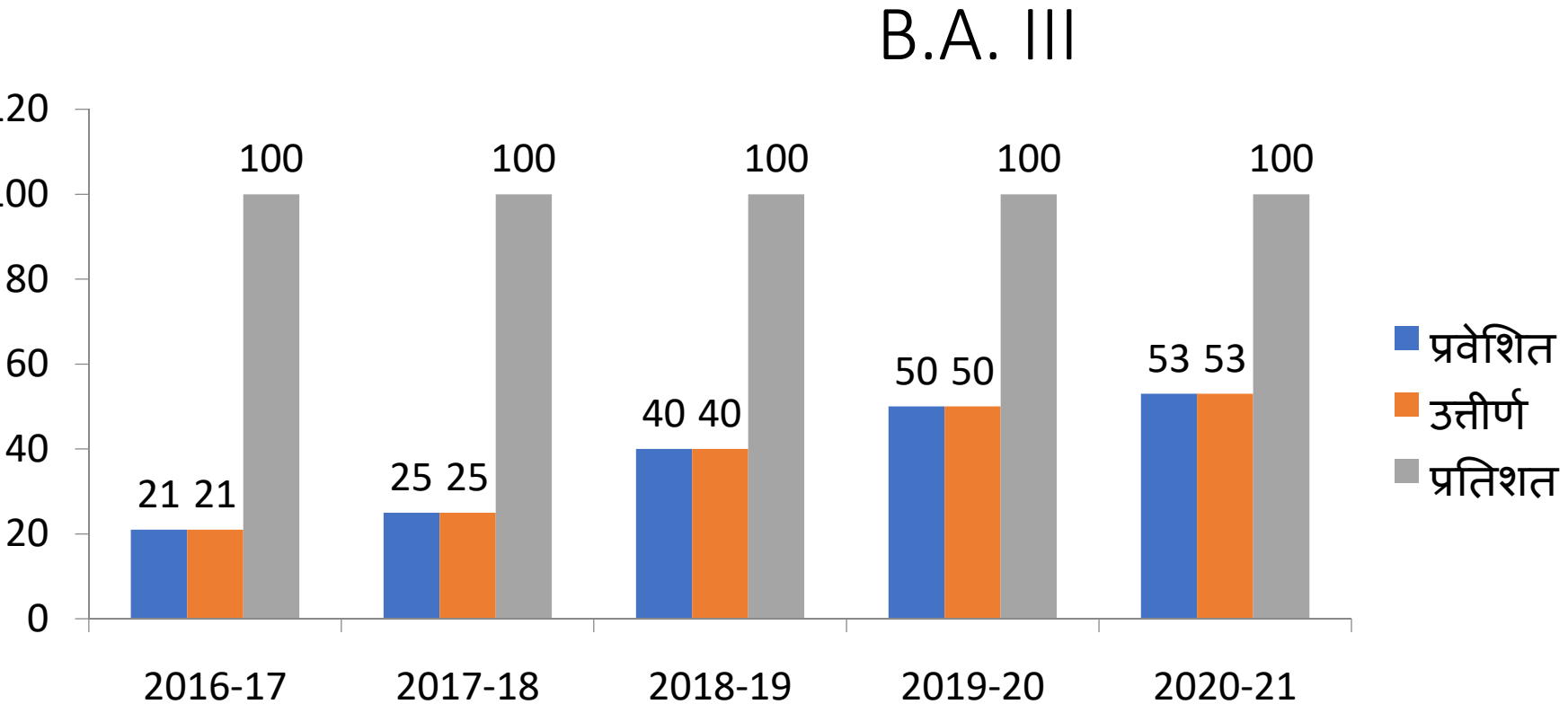

विगत 5 वर्षों में परीक्षा परिणाम

B.Sc. III

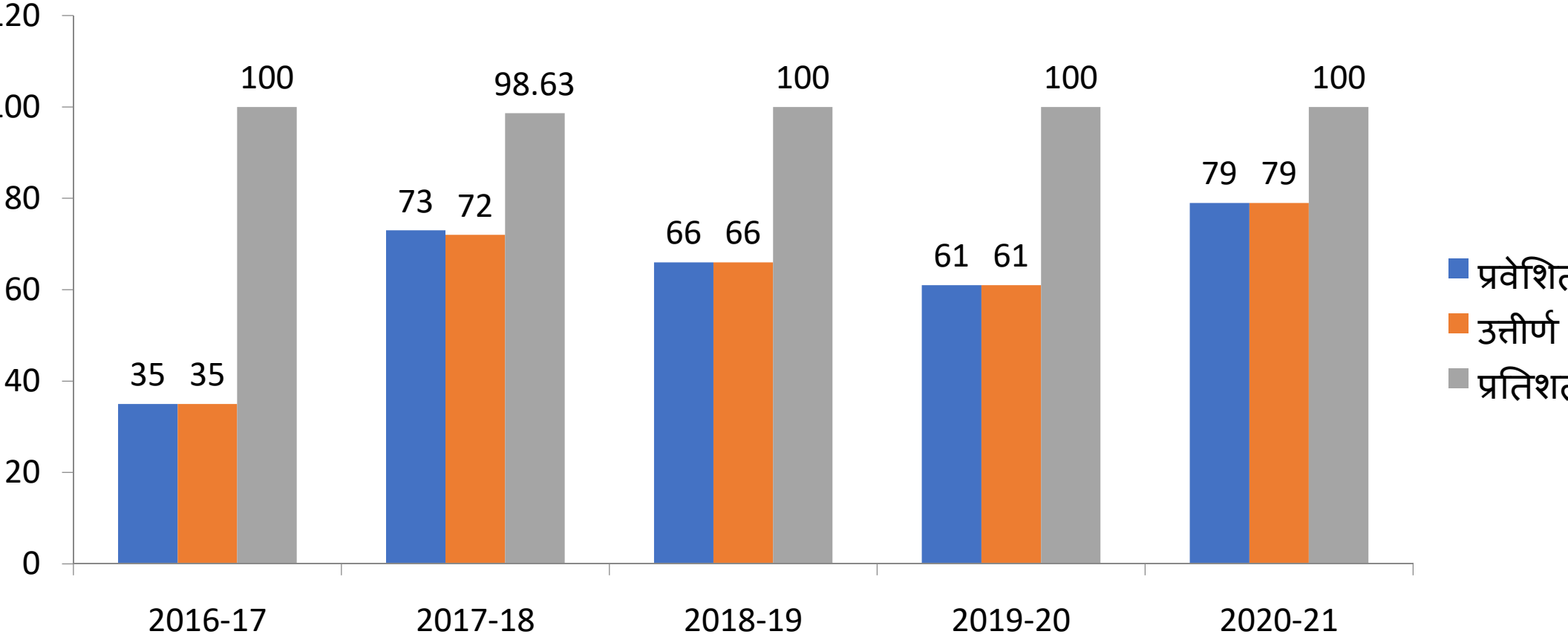

विगत 5 वर्षों में परीक्षा परिणाम

B.Com. III

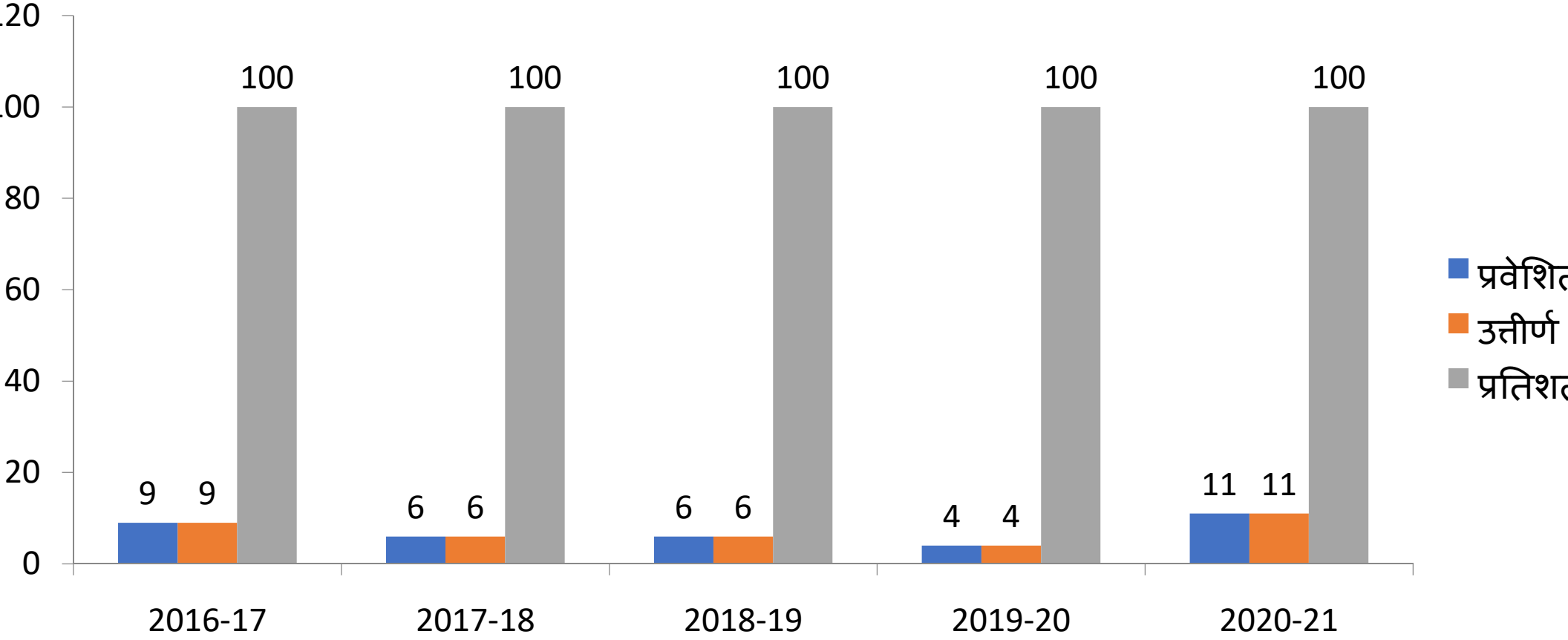

पाठ्यक्रम अधिगम

हिंदी व्याकरण की आधारभूत जानकारी।

व्यवहारिक हिंदी के अनुप्रयोग के प्रति विद्यार्थियों में सहज बोध जागृत करना।

विद्यार्थियों में प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित करना।

देश-विदेश में चल रहे सांस्कृतिक मुद्दों के प्रति विद्यार्थियों को संवेदनशील और जागरूक करना।

हिंदी भाषा के महत्व एवं योगदान को प्रतिपादित करना।विद्यार्थियों के अंदर हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति मूलभ
समझ विकसित करना।

प्राचीन हिंदी काव्य ,हिंदी कथा साहित्य ,हिंदी नाट्य साहित्य, भारतेंदु युग, द्विवेदी युग छायावादी युग ,प्रगतिवादी
युग, प्रयोगवाद, नई कविता की संवेदना और शिल्प की समझ विकसित करते हुए विद्यार्थियों के अंदर सामयिक ब
जगाना।

छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य की प्रारंभिक समझ बनाते हुए बोली और भाषा की अर्थ संपदा से विद्यार्थियों को जो

मजबूत पक्ष

- कौशल युक्त, कुशल, सुशिक्षित, दक्ष अकादमिक शिक्षक समूह।
- हिंदी साहित्य के प्रति विद्यार्थियों की अगाध लगाव एवं जिज्ञासा।
- महाविद्यालय में विभागीय पुस्तकों की पर्याप्त उपलब्धता।
- महाविद्यालय में विद्यार्थियों की शत-प्रतिशत उपस्थिति।
- समस्त संकायों का परीक्षा परिणाम शत् प्रतिशत होना।

कमजोर पक्ष

- छत्तीसगढ़ी बोली, अंग्रेजी भाषा के प्रभाव के कारण मानक हिंदी के उच्चारण में दोष।
- आई .सी .टी. सुविधा का अभाव है।
- हिंदी में स्नातकोत्तर कक्षा नहीं है।

अवसर

एम.ए. सेट, नेट, जे.आर.एफ. क्वालीफाई के लिए एवं नामचीन विश्वविद्यालयों में प्रवेश हे
छात्रों को उचित मार्गदर्शन।

पी.एस.सी .सहित अनेक प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु कुशल मार्गदर्शन।

साहित्य की गद्य-पद्य की विधाओं के अध्ययन एवं प्रेरणा से कवित्व एवं लेखकीय गुणों
विकास हेतु अनुकूल वातावरण।

चुनौतियां

हिंदी में स्नातकोत्तर कक्षाओं की प्रारंभ की चुनौती।

ग्रामीण परिवेश को छोड़कर उच्च शिक्षा, पीएससी एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी
लिए न जाने की प्रवृत्ति।

हिन्दी शिक्षण से नैतिक मूल्यों का विकास

हिन्दी साहित्य के अध्ययन के प्रति रुचि जगाकर विद्यार्थियों के मानसिक क्षितिज का वि
करना। परिणाम स्वरुप वह बेहतर इंसान बन सके।

समग्र रूप से हिंदी साहित्य की ज्ञान बोध के साथ विभिन्न साहित्यकारों के माध्यम से आर्थिक सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक, राजनीतिक परिस्थितियों का ज्ञान अर्जित करना।

राष्ट्रीय एकता एवं अखंडंता की भावना का विकास।

सादर धन्यवाद